।। श्री महालक्ष्मी अष्टक स्तोत्र ।।

महालक्ष्मी अष्टकम देवराज इन्द्र द्वारा रचित माता लक्ष्मी जी को समर्पित एक स्तोत्र है, इसका उल्लेख पद्म पुराण में हुआ है।
इस स्तोत्र के नियमित पाठ से साधक महालक्ष्मी की कृपा से धन-धान्य संपन्न हो जाता है, उसके महान पातकों और शत्रुओं का नाश हो जाता है।

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ।।1।।

अर्थ - श्रीपीठ पर स्थित और देवताओं से पूजित होने वाली है महामाये! तुम्हें नमस्कार है।
चक्र और गदा धारण करनेवाली हे महालक्ष्मी ! तुम्हें प्रणाम है।

नमस्ते गरूडारूढे कोलासुरभयङ्करि।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ।।2।।

अर्थ - गरूड़ पर आरूढ़ हो कोलासुर को भय देने वाली और समस्त पापों को हरने वाली हे भगवति महालक्ष्मी ! तुम्हें नमस्कार है।

सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयङ्करि।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ।।3।।

अर्थ - सब कुछ जानने वाली, सबको वर देने वाली, समस्त दुष्टों को भय देने वाली और सबके दुःखों को दूर करने वाली हे देवि महालक्ष्मी ! तुम्हें नमस्कार है।

सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि।
मन्त्रमूर्ते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ।।4।।

अर्थ - सिद्धि, बुद्धि, भोग और मोक्ष देने वाली हे मन्त्रमूर्तिमय भगवति महालक्ष्मी ! तुम्हें नमस्कार है।

आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्तिमहेश्वरि
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तुते।।5।।

अर्थ - हे देवि ! हे आदि-अंतरहित आदिशक्ते ! हे महेश्वरी ! हे योग से प्रकट हुई भगवति महालक्ष्मी ! तुम्हें नमस्कार है।

स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्तिमहोदरे।
महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ।।6।।

अर्थ - हे देवि ! तुम स्थूल, सूक्ष्म एवं महारौद्ररूपिणी हो, महाशक्ति हो, महोदरा हो और बड़े-बड़े पापों का नाश करने वाली हो। हे देवि महालक्ष्मी ! तुम्हें नमस्कार है।

पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि।
परमेशि जगन्मात् महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ।।7।।

अर्थ - हे कमल के आसन पर विराजमान परब्रह्म स्वरूपिणी देवी ! हे परमेश्वरि ! हे जगदम्ब ! हे महालक्ष्मी ! तुम्हें प्रणाम है।

श्वेताम्बरधरे देवि नानालङ्कारभूषिते।
जगत्स्थिते जगन्मात् महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ।।8।।

अर्थ - हे देवि ! तुम श्वेत वस्त्र धारण करने वाली और नाना प्रकार के आभूषणों से विभूषिता हो।
सम्पूर्ण जगत में व्याप्त एवं अखिल लोक को जन्म देने वाली हो । हे महालक्ष्मी ! तुम्हें मेरा प्रणाम है।

महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिमान्नरः।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा ।।9।।

अर्थ - जो मनुष्य भक्तियुक्त होकर इस महालक्ष्म्यष्टक स्तोत्र का सदा पाठ करता है,
वह सारी सिद्धियों और राज्य वैभव को प्राप्त कर सकता है।



द्वारा संशोधित
जगद्गुरू
श्री पीताम्बरा सिद्धपीठाचार्य
श्री श्री 1008 श्रद्धेय स्वामी
रूपेश्वरानन्द जी महाराज



Swami Rupeshwaranand

स्वामी रूपेश्वरानन्द आश्रम
वाराणसी (उत्तरप्रदेश)

www.swamirupeshwaranand.in
swamirupeshwaranand
सम्पर्क - 7607 233 230
www.brahmavadini.in